शहरी विकास के कारण प्राकृतिक संसाधनों पर पड़ता दुष्प्रभाव : गुवाहाटी एक प्रत्यक्ष उदाहरण

शशिरंजन कुमार
रा.ज.सं.,गुवाहाटी

उत्तर–पूर्वी राज्य असम में बसा गुवाहाटी शहर प्राचीन काल में प्रागज्योतिषपुर के नाम से जग प्रसिद्ध था। जहाँ शहर के दक्षिणी क्षेत्र में नीलांचल पहाड़ियों के आगोश में विश्व प्रसिद्ध माँ कामाख्या का मंदिर स्थित है, वहीं पहाड़ी की तलहटी को स्पर्श करता हुआ महाबाहु ब्रह्मपुत्र प्रवाहित होता है। इसे एक तरह से मंदिरों का शहर भी कहा जाता है। यहाँ यत्र–तत्र फैले हुए कई प्रसिद्ध प्राचीन तथा नवीनतम मंदिर मिल जायेंगे। यह शहर उत्तर–पूर्वी भारत की विचित्र भौगोलिक तथा सामाजिक परिस्थितियों के बीच सामंजस्य बैठाने वाले शहर का एक जीता जागता उदाहरण है। इस शहर को उत्तर–पूर्वी भारत का "गेटवे" या प्रवेश द्वार भी कहा जाता है क्योंकि उत्तर–पूर्वी भारत के किसी भी राज्य में भारत के अन्य राज्यों से प्रवेश करने के लिये गुवाहाटी से ही गुजरना होता है। वहीं अगर उत्तर–पूर्वी राज्यों से भारत के अन्य राज्यों में जाना हो, तो भी गुवाहाटी शहर को ही पार करना होगा। गुवाहाटी शहर संपूर्ण भारत की मिश्रित सभ्यता का एक दिलचस्प उदाहरण है। यहाँ संपूर्ण भारत के विभिन्न राज्यों के लोगों के दर्शन एक साथ हो जायेंगे। अपने भौगोलिक महत्व के कारण गुवाहाटी शहर आज एक व्यावसायिक राजधानी के रूप में तब्दील हो गया है।

किसी समय गुवाहाटी शहर अपनी हरियाली के लिये प्रसिद्ध था। यहाँ चारों और नारियल, सुपारी, केले तथा अन्य पेड़ों को देखा जा सकता था। प्रायः हर घर मे इनके दर्शन हो जाते थे, परंतु आज विकास की अंधी दौड़ में सभी पेड़ों को काटकर उन जमीनों पर ऊँचे–ऊँचे फ्लैटों तथा व्यावसायिक बिल्डिगों का निर्माण हो गया है। आज शहरी विकास का आलम यह है कि हर सौ कदम की दूरी पर एक नया मॉल खुलता हुआ नजर आता है। पहले गुवाहाटी शहर में प्राकृतिक वातावरण से सामजस्य बैठाता हुआ "असम टाइप" घरों का निर्माण होता था जिसमें घरों की छतों को ढलुवाँ तथा हरे रंग का रखा जाता था और घरों के आगे बहुत बड़ी खुली जमीन रखी जाती थी तथा चारों ओर किनारे–किनारे नारियल, सुपारी तथा केले के पेड़ों को लगाया जाता था। वहीं आज एक इंच जमीन भी पेड़ों के लिए उपलब्ध नहीं है और जो भी जमीन उपलब्ध है उन पर बेतरतीब ढंग से फ्लैटों का निर्माण हर जगह होता हुआ चारों ओर देखा जा सकता है। आधुनिक मेडिकल साइंस में भी यह माना गया है कि हरा रंग मानव आंखों के लिए तो लाभप्रद होता ही है, मानव मन को भी स्थिर तथा प्रफुल्ल रखता है। वहीं वास्तुकला के हिसाब से देखें तो ढलुवां छत वाले घरों में रहने वाले व्यक्तियों का स्वाभाव विनम्र बना रहता है। परंतु शहरी विकास की इस दौड़ में अपने परंपरागत मकानों को तोड़कर फ्लैटनुमा बनाने की जब से होड़ शुरू हुई है तब से इस शहर के निवासियों के स्वभाव में विनम्रता के बदले एक अजीब सी अकड़ वाली स्वभाव पद्धति देखने का मिल रही है तथा सहनशीलता का अभाव भी पाया जा रहा है। इस कारण दिन–प्रतिदिन कई असमाजिक हिंसक प्रवृत्ति वाली घटनाओं की पुनरावृत्ति देखने को मिल रही है।

शहरी विकास के कारण गुवाहाटी शहर की जनसंख्या भी बेतहासा बढ़ी है। अगर पिछले दशकों की जनसंख्या वृद्धि का ग्राफ देखें तो लगेगा कि रॉकेट की स्पीड से प्रतिस्पर्धा हो रही है और अनंत ऊंचाइयों को छूने की होड़ सी लगी हो। बढ़ती जनसंख्या के कारण भूजल संपदा पर भी जबरदस्त दबाव पड़ने तथा उसके दुष्परिणाम देखने को मिल रहे हैं। पहले जहाँ मात्र कुँओं से ही पीने का पानी सर्वत्र उपलब्ध हो जाता था वहीं अब 500 से 1000 फीट तक की गहराई तक बोरवेल खोदना पड़ रहा है और बारेवेल की ट्रक लदी मशीनें आमतौर पर यत्र–तत्र देखी जा सकती

है। इसका एक कारण निचली जगहों तथा ताल–तलैयों व झीलों के ऊपर व्यावसायिक परिसरों तथा फ्लैटों को बनाकर भूजल के रिचार्ज स्रोत को खत्म करना भी है। लगातार गिरते जा रहे भूजल स्तर के कारण गुणवत्ता में भी गिरावट पायी जा रही है और तमाम तरह की बीमारियां मनुष्यों को अपना ग्रास बनाने लगी हैं। उनमें से फ्लोरोसिस प्रमुख है जो की पीने के पानी में फ्लोराइड की उपस्थिति मानक सीमा (1 मिलीग्राम/लीटर) से बढ़ जाने के कारण होती है। फ्लोरोसिस के कारण शारीरिक विकृति की घटना गुवाहाटी शहर में आम होती जा रही है। दिन–प्रतिदिन गिरते जा रहे भूजल स्तर तथा पीने के पानी की होती जा रही कमी के कारण शहर में पानी भरे टैंकरों से पीने के पानी का मंहगें दामों पर सप्लाई करने का व्यवसाय दिन दूनी–रात चौगुनी वृद्धि कर रहा है। अगर यही हाल रहा तो हो सकता है कि कुछ सालों के बाद पीने के पानी की सप्लाई भी पेट्रोल पंपों की ही तरह होने लगे और हमें पेट्रोल से भी मंहगे दामों पर इसे खरीदना पड़ जाए।

गुवाहाटी में कोई सीवरेज सिस्टम नहीं है और सेप्टिक टैंकों का निर्माण हर घर और फ्लैटों का एक अनिवार्य अंग है। गुवाहाटी सहित संपूर्ण उत्तर–पूर्वी भारत भूकंप जोन–5 के अंतर्गत आते हैं और महीने में औसतन एक बार 5–6 रिक्टर स्केल का भूकंप आ ही जाता है, परंतु इसके कारण सेप्टिक टैंकों में होने वाले संभावित क्रेक के कारण होने वाले रिसाव से भूजल के प्रदूषण की ओर अभी तक किसी का भी ध्यान नहीं गया है। किसी दिन हो सकता है कि एक शक्तिशाली भूकंप के कारण फ्लैटों के नीचे सेप्टिक टैंकों में रिसाव हो जाए और संपूर्ण शहर के भूजल की गुणवत्ता पर ही सवालिया निशान लग जाए।

बढ़ते शहरीकरण के कारण गुवाहाटी में मोटर–गाड़ियों का अनियंत्रित संख्या में जमावाड़ा हो गया है और इनसे निकलने वाले धुओं के कारण शहर के वायुमंडल में प्रदूषण का खतरा बढ़ता ही जा रहा है। इस कारण शुद्ध ऑक्सीजन का अभाव बढ़ता जा रहा है और श्वास संबंधी गंभीर बीमारियां आम होती जा रही हैं । बढ़ती जनसंख्या वृद्धि के कारण मानव जनित कूड़ों का निपटान भी एक भयंकर समस्या बन गई है और शहर में कहीं भी सड़क के किनारे यत्र–तत्र ये फैले हुए विभिन्न बीमारियों को निमंत्रण देते हुए प्रतीत होते हैं। इसके कारण वायुमंडल दूषित होता है सो अलग। एक तो चारों तरफ गाड़ियों का धुआँ और इसके बाद इन कूड़ों से निकलती दुर्गंध "कोढ़ में खाज" वाली कहावत को ही चरितार्थ करता नजर आता है।

बढ़ती आबादी तथा शहरीकरण के विस्तार के कारण समीपवर्ती जंगलों तथा पहाड़ों पर मानवों का अतिक्रमण हो गया है। जिसके कारण जंगली जानवरों के नैसर्गिक आवासों का खात्मा सा हो गया है और वे बेचारे मानव बस्तियों में आने को मजबूर हो गये हैं। प्राकृतिक पहाड़ियों तथा समीपवर्ती जंगलों के कटने तथा पशु–पक्षियों के प्राकृतिक आवास नष्ट होने के कारण आये दिन शहर में तेंदुओं, अजगरों, जंगली बंदरों, लंगूरों और हाथियों का प्रवास बढ़ गया है। इस कारण कभी–कभी दुर्घटनाओं के कारण उनकी मौत का नजारा भी देखा जा सकता है। पेड़ों के कटने के कारण अब पक्षियों की चहचहाट भी सुनने को नहीं मिलती हैं। बढ़ते शहरीकरण के कारण घर की मुंडेरों पर फुदकती गौरैया चिड़ियां का अस्तित्व ही खतरे में आ गया है। अब यह चिड़ियां देखने को भी बड़ी मुश्किल से मिलती है। गौरैया को किसानों का मित्र माना जाता है जो कीट–पतंगों को खाकर फसलों की रक्षा करती है। गौरैया के न रहने से जाहिर है कि फसलों का प्राकृतिक रक्षक नहीं रहेगा और किसानों को इस कारण गंभीर परिणामों का सामना करना पड़ेगा। प्राकृतिक रक्षकों के नहीं होने से फसलों को कीड़ों से बचाने के लिये कीटनाशकों का प्रयोग बढ़ना जारी है। इसके अत्यधिक उपयोग से खेतिहरों की मृत्यु की संख्या साल दर साल बढ़ती जा रही है। वहीं कहीं–कहीं तो कैंसर फैलने का भी पता चला है। पहले जहाँ वसंत ऋतु में कोयल की कुहु–कुहु सुनने को मिल जाती थी वहीं अब इसका अकाल सा हो गया है और लगता है कि आने वाली पीढियां इस मधुर ध्वनि को संग्रहालय में जाकर टेप रिकार्डर में ही सुन पायेंगें। पशु–पक्षियां मानव जीवन चक्र का एक अभिन्न अंग है और इनके बिना सृष्टि के विकास में त्रुटि पैदा हो जायेगी जो

कि देखने को भी मिल रही है। प्रातःकाल में भ्रमण के लिए निकलने पर पक्षियों की सुमधुर चहचहाहट के बदले गाड़ियों के विचित्र शोर कानों को कर्कश रूप से गुंजायमान करने लगता है।

गुवाहाटी शहर की भौगोलिक संरचना एक घाटी के रूप में देखी जा सकती है, जहाँ यत्र–तत्र फैले हरे–भरे पहाडियों तथा निम्न तराई वाले क्षेत्रों की भरमार थी परंतु मानव मन की लालची प्रवृत्ति ने इन हरी–भरी पहाड़ियों को काटकर निचली जगहों को भरना शुरू कर दिया और उनके ऊपर फ्लैटों का निर्माण शुरू हो गया। इसका परिणाम यह हुआ कि हरितिमा खत्म हो गई और बरसात के दिनों में वर्षा जल के साथ मिट्टियों का बहाव शुरू हो गया और प्राकृतिक ड्रेनों में रूकावट शुरू हो गई तथा कृत्रिम बाढ़ की स्थिति पैदा होने लगी। पहले तो यह स्थिति कुछ घंटों तक ही सीमित रहती थी परंतु अब तो कई दिनों तक यह स्थिति यथावत बनी रहती है। इसके कारण शहर वासियों के दैनिक कार्य भी बुरी तरह बाधित होने लगे हैं।

इन सबके बावजूद आश्चर्य की बात तो यह है कि इतने दुष्परिणामों को झेलने के बाद भी हम धृतराष्ट्र की तरह ही व्यवहार कर रहे हैं और विकास की चकाचौंध में अंधे होकर मानव सभ्यता के विकास में सहायक प्राकृतिक संसाधनों को शहरी विकास के हवन कुंड में स्वाहा करते नहीं थक रहे। अंत में हमें इस गंभीर चेतावनी की और भी ध्यान देना होगा कि शहरी विकास की यह अग्नि कुंड कहीं संपूर्ण मानव समाज को ही न निगल जाए।

हिन्दी वह धागा है, जो विभिन्न मातृभाषाओं रूपी फूलों को पिरोकर भारत माता के लिए सुन्दर हार का सृजन करेगा।

डॉ. जाकिर हसैन